

Original Article

स्वदेश दीपक के उपन्यास साहित्य में चित्रित समस्याएँ

शेख परवेज चाँदसाहेब

संशोधक विद्यार्थी

ईमेल : p9561126737@gmail.com

Manuscript ID:

सारांश:

JRD -2026-180338

ISSN: 2230-9578

Volume 18

Issue 3(B)

Pp. 152-154

March - 2026

Submitted: 25 Feb. 2026

Revised: 02 Mar. 2026

Accepted: 12 Mar. 2026

Published: 31 Mar 2026

स्वदेश दीपक समकालीन हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में स्वदेश दीपक के प्रमुख उपन्यास 'मायापोत' तथा 'नम्बर 57 स्काइन' के आधार पर उनमें चित्रित विविध समस्याओं का अध्ययन किया गया है। इन उपन्यासों में पारिवारिक विघटन, सुख की तलाश, अकेलापन, व्यसनाधीनता, काम-समस्या तथा युद्ध जैसी ज्वलंत समस्याओं को अत्यंत संवेदनशील और यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की विसंगतियों, मानसिक तनावों और मानवीय संबंधों के संकट को अभिव्यक्ति प्रदान की है। साथ ही युद्ध की विभीषिका, राजनीतिक स्वार्थ तथा मानवीय मूल्यों के ह्रास को भी प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त अंधविश्वास, विधवा जीवन, भय, आतंक तथा झूठ जैसी समस्याओं का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार स्वदेश दीपक के उपन्यास भारतीय समाज के विविध आयामों और समकालीन जीवन की जटिलताओं को उद्घाटित करते हैं।

मुख्य शब्द: स्वदेश दीपक, मायापोत, नम्बर 57 स्काइन, पारिवारिक समस्या, अकेलापन, सुख की तलाश, व्यसनाधीनता, काम-समस्या, युद्ध, सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, समकालीन हिंदी उपन्यास।

प्रस्तावना:

इस संसार में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसमें कोई-न-कोई 'समस्या' विद्यमान न हो। मानव जीवन और समस्या का नाता सदा ही अभिन्न रहा है। समस्या रहित जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। समस्त विषम स्थितियों को अपने में समेटकर वह एक गुथी के रूप में उपस्थित होती है। समस्या के जन्म के साथ ही उसके हल की परिस्थितियाँ भी जन्म लेती हैं। परस्पर विरोधी परिस्थितियों में 'समस्या' का उद्भव होता है। कोई भी समस्या ऐसी नहीं होती जिसका हल संभव ना हो। समस्या आज एक कठिन उलझन के सिवाय और कुछ नहीं। पर साहित्यकार, मानव इस उलझन को सुलझाने के लिए हाथ-पाँव हिला रहे हैं लेकिन उनके हाथ में सिवा उलझन के कुछ भी नहीं आ रहा है। दीपक जी के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के विविध रूप मिलते हैं। 'मायापोत' और 'नम्बर 57 स्काइन' उपन्यास में निम्नलिखित समस्याओं को उठाया गया है।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrvb.org/>

DOI: 10.5281/zenodo.21158904



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

शेख परवेज चाँदसाहेब

How to cite this article:

शेख . परवेज . चाँदसाहेब . (2026). स्वदेश दीपक के उपन्यास साहित्य में चित्रित समस्याएँ. Journal of research and development, 18(3(B)), 152–154.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21158904>

1.1 पारिवारिक समस्या:-

समाज का निर्माण ही परिवारों से होता है इसी कारण परिवार को समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार की कोई भी अपूर्णता या अभाव परिवार में समस्या निर्माण करती है। 'मायापोत' में पारिवारिक समस्या को बड़ी बारिकी से उभारा गया है।

उपन्यास की नायिका डॉ. राधा प्रेम-विवाह करती है लेकिन पति के संदेही स्वभाव के कारण उसका दांपत्य जीवन एक विडंबना बन गया था। डॉ. राधा को उसका डॉ. पति हमेशा प्रताड़ित करता था। स्वयं डॉक्टर होने के बाद भी वह हमेशा नशे की गोलियाँ खाता था। पति-पत्नी के बीच की दूरियाँ और बढ़ गई थी। डॉ. राधा को बच्ची हुई और वह भी सुंदर तब उसका पति उससे और भी नफरत करने लगा था। वह राधा को अपमानित करने के नये-नये तरीके हमेशा खोजा करता था। वह हमेशा अपनी पत्नी पर नजर रखता था। डॉ. राधा से उसका यह कहना "साली हरामजादी। दूसरों के साथ हँसती है... तुम हो ही गंदी औरत। पता नहीं शादी से पहले कितनी बार प्रेगनेंट हो चुकी हो? मैं कहता हूँ। यह बच्ची भी किसी और की है। अपने पाप को ढ़ौंपने के लिए तूने मुझसे शादी की।" उसके दांपत्य जीवन के तनाव को ही दर्शाता है। पति-पत्नी के बीच का यह तनाव इतना बढ़ गया कि पति दिन-रात नशे में धुत रहता था और अपना मानसिक संतुलन खो दिया था। एक दिन ऐसी ही मानसिक अवस्था में मरीज को देखने जाते वक्त रास्ते में ही उसकी स्कूटर बस से टकराई, जिसमें उसकी मौत हो गई। पारिवारिक समस्याओं के कारण डॉ. राधा का परिवार पूरी तरह तबाह हो गया नजर आता है।

1.2. सुख की तलाश की समस्या:-

आज आधुनिक युग की यह एक व्यापक और ज्वलंत समस्या है। समाज के हर वर्ग में जीनेवाला व्यक्ति इस समस्या से आहत है। मानव जीवन में हर व्यक्ति सुख की तलाश में दिन-रात भाग रहा है। लेकिन अंत तक वह अपनी इस इच्छा में, तलाश में कामयाब नहीं होता। वह सुखरूपी मायापोत में फँसता जाता है।

'मायापोत' उपन्यास का नायक संतोष एवं नायिका डॉ. राधा इस सुख रूपी मायापोत को तलाशने की कोशिश करते हैं लेकिन नियति की काली शक्तियाँ उन्हें इस सुख से वंचित कर देती हैं। संतोष के दोस्त शर्मा का यह कहना "तुम जिस सुख की तलाश कर रहे हो वह है नहीं। सिर्फ फैंटमशिप है। ... सब कुछ फैंटमशिप है, माया है। जिस मायापोत के मोह में तुम हो, जिसके पीछे, सुख की तलाश में भागे जा रहे हो, वह कहीं है ही नहीं।" मानवी जीवन की इस प्रवृत्ति को व्याख्यायित करता है। इस समस्या को लेखक ने एक व्यापक फलक का सहारा लेकर मनोवैज्ञानिक ढंग से उभारा है।

1.3. अकेलेपन की समस्या:-

अकेलापन एक ऐसी समस्या है जो हर व्यक्ति को सताती रहती है।

'मायापोत' उपन्यास में संतोष, डॉ. राधा और शर्मा इसी समस्या से ग्रस्त हैं। उपन्यास का नायक संतोष एक अकेला आदमी है। उसके दोस्त उस पर पैसा तो खर्च करते हैं लेकिन उसका अकेलापन दूर नहीं कर सकते। संतोष अपना अकेलापन दूर करने का प्रयास हर वक्त करता रहता है। डॉ. राधा से शादी करके वह अपना घर बसाना चाहता है लेकिन उसकी यह इच्छा पूरी नहीं होती। वह डॉ. राधा को छोड़कर फिर किसी दूसरे शहर चला जाता है।

'मायापोत' उपन्यास में डॉ. राधा भी इसी समस्या से आहत है। वह पति की मौत के बाद अकेली रहती है। उसकी बेटी निक्की उससे दूर स्कूल में पढ़ती है। अकेलापन दूर करने के लिए वह अध्यात्मिक शिक्षा की ओर आकर्षित होती है। वह शरीर को कुछ देर के लिए त्याग कर कहीं और जाने की कला हासिल करती है। संतोष के साथ जब वह प्यार करने लगती है तब उसे लगता है उसका लंबा अकेलापन अब हमेशा के लिए दूर हो जाएगा लेकिन अंत में संतोष उसे छोड़कर चला जाता है और राधा फिर से अकेली रह जाती है।

अकेले इन्सान के दिल में हमेशा उथल-पुथल मची रहती है। इसी कारण वह चैन से नहीं रह पाता। इस समस्या से वह निरंतर जूझता रहता है। इसके साथ ही 'नं. 57 स्ट्राइन' उपन्यास में सेना के जवान और उसके परिवारों के लोगों को भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है। सेना में होने के कारण तथा आम तौर पर जब युद्ध शुरू होता है तब सेना के जवान अपनी पत्नी और परिवार के अन्य लोगों से दूर होते हैं, उन्हें भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है। दीपक जी ने इस समस्या को यथार्थता से चित्रित किया है।

1.4 व्यसनाधीनता की समस्या:-

नशा लाने के लिए शराब के सिवाय अन्य भी चीजों का समाज में बहुत बड़ी मात्रा में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें गांजा, चरस, अफिम, कोकिन, मारफीन, पैडीडीन, व्हेरनाॅल तथा नशे की गोलियाँ और इजेक्शन आदि। इन सारी नशीली चीजों ने आज भारतीय समाज तथा युवा जगत् को बुरी तरह से ग्रस्त किया है जो आज एक चिंता का विषय बन गया है। व्यसन आदमी को अकार्यक्षम, अनुशासनहीन

तथा बर्बाद कर देता है। महात्मा गांधी के विचार से "शराब पीनेवाला व्यक्ति नैतिक दृष्टि से गिर जाता है। और उसकी आत्मा मर जाती है। शराब पहले मनुष्य पीता है, बाद में शराब मनुष्य को पी जाती है। ऐसा इसलिए कहा जाता है कि शराब के कारण मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। धीरे-धीरे शराब अंदर से मनुष्य का शरीर कुरेदती रहती है। स्वास्थ्य के साथ-साथ गृहस्थी भी उजड़ जाती है। दीपक जी ने 'मायापोत' उपन्यास में इस समस्या को बड़ी कुशलता से चित्रित किया हुआ है। उपन्यास का नायक संतोष तथा उसके दोस्त मेजर भट्टी और रवि इस समस्या से ग्रस्त हैं। मेजर भट्टी और रवि सेना के अफसर हैं जो कहीं-कहीं शराब का अतिरिक्त सेवन करते नजर आते हैं। संतोष अकेला आदमी है इसी कारण वह हमेशा मौज-मस्ती में रहता है। शराब पीना और बिलियर्ड खेलना उसे अच्छा लगता है। शराब के अतिरिक्त सेवन के कारण ही संतोष को अपने पेट का ऑपरेशन करना पड़ा है। डॉ. राधा का पति शक्की मिजाज का आदमी था। तनाव में आकर वह नशीली गोलियों का सेवन करता था। डॉ. राधा और उसके बीच का तनाव बढ़ने के बाद वह हर रोज नशीली गोलियाँ खाता था। एक दिन इसी नशे की हालत में उसके स्कूटर का एक्सीडेंट हो जाने से उसमें उसकी मौत हो जाती है। उपन्यास में नशा करनेवाले लोगों की जिंदगी तबाह होती है इसका सफल चित्रण किया है। साथ ही सेना के लोगों की व्यसनाधीनता को भी दीपक जी ने यथार्थता से चित्रित किया है।

1.5 काम समस्या:-

काम मानवीय जीवन की सहज प्रवृत्ति है। स्त्री और पुरुष में यह भावना कम-अधिक मात्रा में होती है, लेकिन जब उसका अतिरेक होता है तब काम समस्या निर्माण होती है। 'मायापोत' में डॉ. राधा तथा उसका डॉ. पति शादी से पहले ही नाजायज संबंध रखते हैं। उनकी काम आसक्ति को लेखक ने चित्रित किया है।

उपन्यास का नायक संतोष, मेजर भट्टी तथा रवि भी इस समस्या से आहत दिखाई देते हैं। काम के अतिरेक से वह शादी से पहले वेश्याओं से नाजायज संबंध रखते हैं। उपन्यास की नायिका डॉ. राधा जब संतोष को देखने आती है तब दोनों में प्रेम हो जाता है। लेकिन वह भी शादी के पहले नाजायज संबंध रखते हैं। उपन्यास में यह सभी पात्र शिक्षित होते हुए भी काम समस्या से पीड़ित दिखाई देते हैं।

1.6. युद्ध की समस्या:-

इस देश को स्वतंत्र करने के लिए जितने लोगों ने अपने प्राण गँवाये उससे ज्यादा देश की सुरक्षा की खातिर लोगों ने अपने प्राणों को गँवाया है। आज राष्ट्र की सुरक्षा एक बहुत ही कड़ीन एवं गहन समस्या बन गई है। भारत की अखंडता और एकता में इससे पहले ऐसा संकट कभी नहीं आया जो आज हमारे सामने एक बड़ी समस्या के रूप में आया है। दीपक जी ने 'नम्बर 57 स्क्वाड्रन' उपन्यास में इस समस्या को बखूबी ढंग से चित्रित किया है, जिसमें देश, समाज, व्यवस्था एवं शांति पर युद्ध के कुप्रभाव का चित्रण किया गया है।

युद्ध की भयंकरता एवं पाकिस्तान और भारत की बर्बरता के प्रसंगों द्वारा युद्ध का सजीव चित्रण किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से युद्ध की विभीषिका, उसके दुष्परिणामों तथा हिंसात्मक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है, इसके साथ-साथ देश की सीमा सुरक्षा के लिए युद्ध की अनिवार्यता को भी स्वीकार किया है। 'नम्बर 57 स्क्वाड्रन' उपन्यास में ले. विनय शर्मा के माध्यम से राजनीति पर करारा व्यंग्य भी कसा है। उपन्यास में एक जगह विनय शर्मा कहता है "यह सब पावर-पॉलिटिक्स है। अपनी गद्दी कायम रखने की बात। देश तो इन लोगों के लिए बाद में आता है। ... बहुत दिनों से यह सिलसिला है सियासत का कि बच्चे जब जवां हो तो कत्ल हो जाएँ।"⁸ इन शब्दों में उपन्यासकार युद्ध के दुष्परिणाम, मानवतावादी विचारधारा और राजनीति पर किये व्यंग्य को प्रस्तुत करता है। युद्ध की समस्या को अत्यंत यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करने में दीपक जी सफल हुए हैं।

निष्कर्ष:

इसके साथ ही दीपक जी ने अपने उपन्यास में अंधविश्वास, विधवा की समस्या, डर, आतंक की समस्या, झूठ की समस्या आदि को बड़ी सफलता के साथ चित्रित किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृ. 10
2. संपा. श्री नवल जी नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 1407
3. संपा. सुमेरजी लीलावती जैन अमर कोश, पृ. 444
4. स्वदेश दीपक प्रश्नावली जवाब
5. स्वदेश दीपक - मायापोत, पृ. 69
6. 8. स्वदेश दीपक नम्बर 57 स्क्वाड्रन, पृ. 69